INDIRA GANDHI NATIONAL OPEN UNIVERSITY

Staff Training and Research Institute of Distance Education

New Delhi 110068

Control No.:223056753S

UGC-Approved Short-Term Professional Development Programme

Under Pandit Madan Mohan Malaviya National Mission on Teachers and Teaching

This is to certify that

KARABI TALUKDAR

RADHA GOVINDA BARUAH COLLEGE

participated in and successfully completed the

Professional Development Programme on
'Implementation of NEP-2020 for University and College Teachers'

held from 12-20 June, 2023

and obtained 'A+' Grade

Prof. Santosh Panda
Director, STRIDE &
Coordinator of NEP-PDP Committee,
Indira Gandhi National Open University

New Delhi
Date of Issue:June 26, 2023

Prof. Uma Kanjilal
Pro-Vice Chancellor
Indira Gandhi National Open University

HPU/MMTTC/2024/0531

सत्यमेव जयते
Government of India

MALAVIYA MISSION
TEACHER
TRAINING PROGRAMME

University Grants Commission

CERTIFICATE OF PARTICIPATION

NEP 2020 ORIENTATION & SENSITIZATION PROGRAMME

This is to certify that ***Dr. Karabi Talukdar, Assistant Professor*** from ***R.G. Baruah College, Assam*** has completed the NEP 2020 Orientation & Sensitization Programme on ***Higher Education & Society*** under Malaviya Mission Teacher Training Programme (MM-TTP) of University Grants Commission (UGC) Organized by Malaviya Mission Teacher Training Centre, Himachal Pradesh University, Shimla from ***06.06.2024*** to ***15.06.2024***

Director/Coordinator (MM-TTC)

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

UNIVERSITY GRANTS COMMISSION

Malaviya Mission Teacher Training Centre (MMTTC)

UNIVERSITY OF CALCUTTA

UNIVERSITY OF CALCUTTA • ADVANCEMENT OF LEARNING •

UGC-SPONSORED REFRESHER COURSE

This is to certify that

Dr. Karabi Talukdar

Assistant Professor

R.G. Baruah College

Kamrup Metropolitan

participated in Refresher Course in ***Hindi and Cultural heritages***

from 04th to 17th November 2025

and obtained Grade 'A+'

Director	Coordinators	Registrar / Vice Chancellor

Note: A+: 85 percent and above | A: 70 percent to less than or equal to 84 percent | B: 60 percent to less than or equal to 69 percent | C: 50 percent to less than or equal to 59 percent

WOMEN AND SOCIETY

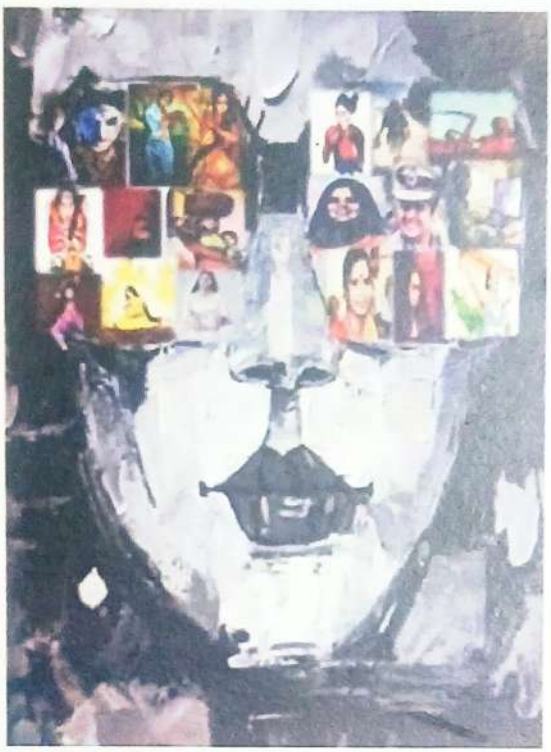

Editor

Dr. Hiramani Haloi

B.B.K COLLEGE, NAGAON

ESTD 1971

বিদ্যয়া জ্ঞানম্ অশ্নুতে

WOMEN CELL

BAOSI BANIKANTA KAKATI COLLEGE

NAGAON, BARPETA, (ASSAM)

WOMEN AND SOCIETY : A collection of research articles by several authors edited by Dr. Hiramani Haloi and published by Women Cell, BBK College, Nagaon.

First edition : March, 2023. Price : Rs. 500/-

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, transmitted or utilized in any form or by any means, electronic mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the copyright owner Author/Editors. Application for such permission should be addressed to the Publisher and Author/Editors. Please do not participate in or do not encourage piracy of copyrighted materials in violation of the author's rights. Purchase only authorized editions.

The responsibility for facts stated, opinion expressed or conclusions reached and plagiarism, if any, in this book is entirely that of the author. Neither the publishers nor the editor will be responsible for them whatsoever.

ISBN : 978-81-954457-1-4

Published by : Women Cell BBK College, Nagaon, Barpeta (Assam)

Editor : Dr. Hiramani Haloi

Assistant Editor : Ilora Narzary

Members : Anupama Devi
Dr. Barnali Das
Manalisha Tumung
Pori Bora
Priyambada Das
Kabyashree Phukan
Serdihun Terongpi

Cover photo Source : Internet

Printed at : Ashirbad Computer Press, Barpeta

Price : Rs. 500.00 only.

मन्नू भण्डारी के उपन्यासों में नारी की स्थिति

करबी तालुकडार
सहकारी अध्यापक, हिन्दी विभाग
आर. जि. बरुवा कलेज, गुवाहाटी

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य को संवेदनशील मूल्यधर्मी साहित्यकारो ने एक नया आकाश दिया है। नवीन असाधारण महत्व का स्वतंत्र चिन्तन करने वाले साहित्यकारों में जैनेन्द्र कुमार, भीष्म साहनी, मोहन राकेश, मन्नू भण्डरी, कृष्ण सोबती, मृदुला गर्ग, मंजुला भगत, नासिरा शर्मा, कमलेश्वर आदि नामों की एक महत्वपूर्ण श्रृंखला है। मन्नू भण्डरी ने हिन्दी कथा साहित्य को एक नया फलक एवं एक नया आयाम दिया है। आधुनिक नारी की ज्वलंत समस्याओं को उठाने का बीड़ा जिन महिला कथाकारों ने उठाया है। उनमें मन्नू जी जैसे कथाकार का नाम अग्रगण्य है।

मन्नू जी का जन्म ३ अप्रेल सन् १९३१ ई. में मध्य प्रदेश के भानुपुर में हुआ था। हिन्दी परिभाषिक के आदि निर्माता श्रीमुख सम्पत राय भण्डारी की सबसे छोटी पुत्री मन्नु भण्डारी को लेखन पैतृक दाय के रुप में प्राप्त रहा है। पिता के गौरवपूर्ण कृतित्व की छाया में मन्नू जी की लेखन शैली दृष्टि पैनी होती गई है। प्रारंभिक शिक्षा के उपरान्त काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से उन्होंने एम.ए.किया। कहानीकार ओलोचक राजेन्द्र यादव के साथ विवाह होने से उन्हें सर्वसुलभ परिस्थितियाँ मिल गयी।

मन्नूजी के व्यक्तित्व की छाया उनके लेखन में स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। वह नारी को उसकी पहचान देती है। मन्नू के अनुसार नारी के अन्दर अच्छाई भी है और बुराई भी। वह कोई देवी नही है और न ही दानवी है। शायद इसी कारण आज भी उनकी लेखनी में पूरी विश्वसनीयोतो है। अपनी मौलिकता के कारण उनकी कृतियाँ दिशा- निर्देशन का कार्य करती है। १९५० मे इनका प्रथम कहानी संग्रह 'मैं हार गई' प्रकाशित हुआ। फिर तो कथा जगत में एक सनसनी फैल गयी। नारी का यथार्थवादी साक्षात्कार और

वह भी इतना सटीक। आधुनिक नारी के दु:खों को मन्नुजी ने भलीभांति समझा। एक सफल चित्रकार के समान अपने कथा साहित्य में उन्हे वर्णित और रेखांकित किया। ओनकी पात्राएँ सीता के समान देवी नही है, न हो कलयुगी कलंकिनी है, वरन् यथार्थ नारी है, जो सोचती है, समझती है। वे हाड़-मांस का पुतला है। दुख: सुख, वासना, प्रेम सभी भावनाएँ महसूस करती है।

मन्नू जी अब तक पाँच उपन्यास लिख चुकी है। ये उपन्यास नारी और उसकी अस्मिता एवं अस्तित्व से जुड़े हुए है। इन्होंने इनमें आधुनिक समाज के उन चरित्रों को लिया है, जो हर समय अस्तित्व से जूझते रहे है। हर समय अपने अस्तित्व को साबित करता चाहते है। वे चुपचाप रहकर अपना जीवन समाप्त नही करना चाहते। मन्नू भण्डरी का उपन्यास साहित्य विविधता लिये हुए है। उनके पाँच, उपन्यास है-

१. आपका बंती
२. स्वामी
३. एक इंच मुस्कान
४. महाभोज
५. कलवा

इनमें से आपका बंती अँधी आधुनिकता की कहानी है। महानगर के पारिवारिक समस्याओं की अनगिनत श्रृंखलाएँ है। जीवन एक शाप बनकर रह गया है। इसमें शकुन को केन्द्र बनाया गया है। शकुन और पति अजय के बीच अहं भाव वृहद् समस्या का रूप धारण कर लेता है। 'इगो' की समस्या बढ़ती है तो दोनों अलग अलग रहने लगते है। इस उपन्यास की प्रसिद्धि पुत्र बंती के मनोवैज्ञानिक चित्रण के कारण है। 'एक इंच मुस्कान' तीन पात्रों के गिर्द घुमता रहता है। प्रेम त्रिकोण के विषय पर आधारित इस उपन्यास मे शिथिलता का कही भी आभास नही होता। यह मन्नू भण्डारी और राजेन्द्र यादव के सहलेखन से जन्म उपन्यास है। जिम्मेदारियाँ उठाना ही दाम्पत्य जीवन का लक्ष्य नही है। आज सम्बन्धों में ऊष्मा होना भी आवश्यक है। आज नारी केवल दो रोटी के साथ अपमान का घूँट नही पी सकती। भूखी रह सकती है पर स्वाभिमान पर आघात बर्दाश्त नही कर सकती।

'स्वामी' उपन्यास मे मन्नू भण्डारी ने बंगाली कथाकार शरतचन्द्र की लिखी कथा को नया संदर्भ तथा नया अर्थ दिया है। वास्तव में मन्नू जी ने निर्माता निर्देशक बासु चटर्जी के आग्रह पर शरतचन्द्र जी की कहानी को अपने शब्दों में बाँधकर, एक नया क्लाइमेक्स देकर नारी के स्वाभिमान की रक्षा की है। उधर मन्नू भण्डरी द्वारा रचित उपन्यास 'कलवा' एक बालोपयोगी उपन्यास है। यह उपन्यास पंचतंत्र की कथाओ पर आधारित है। कलवा चमार जाति का ईमानदार और मेहनती जैसे सद्गुणों से युक्त एक बालक है। वह अपनी सद्बुद्धि से कैसे राजा बन जाता है। इस बात को आधार बनाकर इस उपन्यास के माध्यम से बच्चो की सद्वृत्तियों की शिक्षा दी गयी है। तथा मन्नू भण्डरी के अंतिम उपन्यास 'महाभोज' वातावरण प्रधान उपन्यास की श्रेणी में आता है। यह उपन्यास आधुनिक लोकतांत्रिक राजनीति के आधार पर लिखा गया है। समकालीन राजनीतिक परिस्थितियों के आगे बड़े बड़े राजनेता अपनी भ्रष्ट बुद्धि का प्रयोग करते है। बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है। नेताओं की महानता, उदारता, नि:स्वार्थता का स्वरूप बदल गया है। जैसा कि हमारा आज का विषय नारी की स्थिति है इसलिए हम मन्नू जी के केवल तीन उपन्यासों को लेकर ही विवेचना करेंगे क्योकि 'कलवा' और 'महाभोज' इस दृष्टि से आलोचना करने लिए के सटीक नही हो पाएगा।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से भारतीय नारियों ने निरन्तर विकास किया है। आज हर क्षेत्र मे नारी की विद्यमानता है। विकास के साथ साथ उनकी जिम्मेदारियाँ भी बढ़ती जा रही है। उनकी व्यक्तित्व में आशातीत उन्नति हुई है। मानसिकता जटिल से जटिलतर होती जा रही है। तनाव ऐर संघर्ष भी नारी जीवन में उसी रूप में बढ़ते जा रहे है, जिस प्रकार पुरुष जीवन में। पहले स्त्री का कार्यक्षेत्र सीमित था। गृहस्थी को सजाना, संवारना, सन्तान- पति दोनों के सुख-दुख की परवाह करना और बाकी समय उसका अपना होता था। पर आज उसके कार्य-क्षेत्र में दुगुनी गति से बढ़ोत्तरी हुई है। आज उसे घर-बाहर, गृहस्थी, नौकरी दोनों और ही गहराई से चिन्तन करना पड़ता है। आज पुरुष से अधिक श्रम चाहे शारीरिक हो या मानसिक नारी ही करती है। मन्नू भण्डरी ने ऐसी नारियों को अपनी लेखनी का विषय बनाया है, जो समाज में संघर्ष करते हुए जी रही है। ऐसी युवतीयाँ भी है, जो पुराने मानदण्डों ओर अनुशासनिक

प्रतीकों की अवहेलना कर अपने परिवार को इज्जत की रोटी एवं सुख-चैन दे रही है। परन्तु विपरीत परिस्थितियों में वे अपने को जीवन समर में खड़ा करती है। इसी के साथ वे परेशान है तो केवल इसलिए कि उन्हें समाज में दोहरी भुमिकाएँ निभानी पड़ती है। जबकि पुरुष केवल एक ही भूमिका निभाकर वह अपने को सर्वज्ञ एवं सर्वोच्च मानती है, रक्षित किया जा रहा है। शैक्षणिक राजनैतिक, वैज्ञानिक व आर्थिक क्षेत्रो में इन अड़तालीम वर्षों में जितना पाया सामाजिक व पारिबारिक क्षेत्र में उतना ही खो दिया है।

'आपका बांटी' उपन्यास मन्नू भण्डारी का सवसे प्रसिद्ध और विवेच्च उपन्यास रहा है। इसमें नारी को पति से सम्बन्ध बनाने और मधुर न बना पाने पर अपनी राह चुनने का अधिकार दिया गया है। उनके उपन्यासों में नारी छटपटा कर रह जाती है। वह पति को छोड़ना चाहती है, पर नही छोड़ पा रही है। कही सामाजिक परिवेश आड़े आ रहा है तो कही बच्चे और आर्थिक समस्या। सभी समस्याओं और छटपटाहटो का जवाव उन्होंने अपने इस उपन्यास में दिया है। एक समस्या से नारी बचती है तो दुसरी समस्या से दो चार होना पड़ता है। यदि अपनी इच्छाओं के अनुसार वह जीती है तो बच्चें के भविष्य पर प्रश्न चिह्न लग जाता है।

आधुनिक दाम्पत्य जीवन पर सटीक टिप्पणी करते हुआ मन्नूजी का उपन्यास आपका बांटी एक ज्वलंत दस्तावेज है। नारी बच्चे को अपने पास, रखती है। विवाह विच्छेद से नारी को अधिक पीड़ा होती है। बच्चे के लिए उसे हर सुख का बलिदान करना होता है। यह समाज का कैसा इंसाफ है। मन्नू जी की तलाक शुदा नारी बच्चे को छोड़ने को तैयार है। अगर अजय अपनी जिन्दगी की नई शुरुआत कर सकता है तो तुम क्यों नहीं ? बांटी को ही दरार बनना है तो मीरा-अजय के बीच में बने। अजय भी तो जाने कि बच्चे को लेकर किस तरह की यातना से गुजरना पड़ता है। कि पुरानी स्लेट इतनी जल्दी और आसानी से साफ नही होती।२

मन्नू भण्डारी और राजेन्द्र यादव हिन्दी साहित्य के प्रयोगवादी कथाकार है। उनका 'एक इंच मुस्कान' उपन्यास संयुक्त लेखन का प्रयास है, जो सर्वथा सफल कहा जा सकता है। उनके उपन्यास में कही भी विचारों के प्रवाह में अवोध दिखाई नहीं पड़ता उपन्यास में नारी का अस्तित्ववाद रूप सामने आता

है। नारी शादी जैसी संस्था के बिना भी जी सकती है। उसका अपना जीवन है जिसे वह अपने तरीके से जीना चाहती है ? इस उपन्यास मे अमला का चरित्र हृदय को झकझोर कर रख देता है। इसमे रंजना अमर व अमला के बीच में अपने को वाधा समझती है। पति के रूप में अमर को पाकर भी उसे परायेपन का बोध होता है। स्वतंत्र्योत्तर युग मे नारी हर रूप में अपने अस्तित्व को बनाये रखना चाहती है। अमला जीवन में सीमाओं मर्यादाओ और बन्धनों को नही मानती। अकेली पुरुष विहीन नारी के अन्तर्द्वन्द को कथाकारों ने ऐसा उभारा है कि नारी सिर्फ एक मानवीय रूप में सामने आती है। नारी अपने आपसे लड़ती है, समाज से लड़ती है पर अन्त में अन्तहीन भटकन ही उसके हाथ लगती है। समाज क्यों एक अकेली स्त्री को खुश नही रहने देता ? परित्यक्ता स्त्री अछूत क्यों हो जाती है। वर्षों बाद यदि पुरुष उसे स्वीकार करना चाहे तो स्त्री क्यों उसे स्वीकारे।

पारिवारिक विशेषताओ एवं परम्परागत विचारों से आक्रान्त नारी के अस्तित्व की हत्या ही 'स्वामी' उपन्यास का कथानक है। इस उपन्यास पर यह आक्षेप है कि उसमें नारी के विवाह पुर्व के प्रेम सम्बन्धों की समस्या को उठाया गया है। इसमें वैवाहिक जीवन का नारकीय रूप दृश्टिगत हो रहा है। पति-पत्नी के मध्य विश्वास लुप्त हो रहा है। इस उपन्यास मे मन्नू भण्डारी ने पति घनश्याम और पत्नी सौदामिनी के आपसी रिश्तों को आधार बनाया है। नारी यदि थोड़ी भी भावुक होती है। उससे उसका ही नुकसान होता है। विवाह के पहले प्रेमी नरेन्द्र एवं सौदामनी के भावात्मक रिश्ते बदुत प्रगाढ़ थे। लेकिन ससुराल पक्ष ने पुत्रबधु को इतना अधिक अपमानित किया कि वह घर छोड़ने को मजबुर हुई। वासना के वशीभुत होकर वह पाप करने नही जाती। यहाँ नारी अन्तर्द्वन्द, आस्था अथवा अनास्था के बीच घटित होता है। अन्ततः मानवीय नैतिक मूल्यों की बिजय दिखाकर मन्नू जी ने उपन्यास को सहज मानवीय अन्तर्द्वन्द की कहानी बना दिया है। मूलतः नारी चरित्रहीन नही होती। अन्दर से वह एक माँ बहन ओर पत्नी की भावनाओ से भरी होती है। परन्तु समाज ही उसे बुरा बनाता है। नारी को तोड़ने का समाज अनर्थ प्रयास करता हैं। नारी जीवन की समस्त अच्छाइया बुराइयों में परिवर्तित हो जायेंगी। नारी को ससुराल द्वारा इतना तनावग्रस्त कर दिया जाता है कि वह अपना विवेक ही खो

बैठती है। विवेकहीनता में वह अपना ही अहित कर लेती है। यह स्थिति उसका जीवन ही नष्ट कर देती है। समाज बदल नही सकता। वह एक एक गलती की सजा देता है। मन्नू भण्डारी जी ने एपने उपन्यासें में नारी की स्तिति को समझाने के लिए उसके कई रूप को चित्रित किया है। जैसे कि परम्पराओं से संघर्ष करती हुई नारियाँ, समझौतापरस्त नारियाँ, अपनी ही धुन में रमी नाहियाँ आदि।

मन्नू जी के उपन्यासों की संख्या अपेक्षाकृत सीमित है पर उपन्यासकार के रुप में मन्नू जी को प्रतिष्ठा में उनकी रचनागत अल्पता किसी तरह की वाधा उत्पन नही कर सकी है। इसका प्रमुख कारण मन्नूजी के उपन्यासों की श्रेष्ठता ही है। नारी पात्र के चरित्र-चित्रण का कौशल मन्नू जी की वहुत-सी विशेषताओं में से पहली विशेषता के रूप में माना जा सकता है। इनके नारी पात्र निरचयी, दृढ़ और संकल्प के पव्के भले ही न हों, परन्तु उसकी यथार्थ के साथ समझौता संदेहास्पद है। संभवत: इसी यथार्थ के वल ने उन नारी पात्रों को आज तक बराबर चर्चा में बनाये रखा है। मन्नू की नारियाँ चिन्तनशील है, आधुनिक बोध से सम्पन्न है, लेकिन इतना होते हुए भी उनके बहुत से नारी पात्र परिस्थितियों के समक्ष विवश दिखाई पड़ते है। इस प्रकार से हम देखते है कि मन्नुजी के नारी पात्रों के चरित्र भारतीय समाज की संक्रमण कालीन अवस्था से सम्बद्ध है।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि मन्नूजी का उपन्यास यथार्थवादी धरातल पर अवतरित होते है, क्योंकि मन्नू जी एक सशक्त यथार्थवादी रचनाकार है।

संदर्भ ग्रमथ-सुची

१. अपका बंटी- मन्नु भण्डारी, राधाकृष्ण प्रकाशन
२. एक इंच मुस्कान- राजेन्द्र यादव एवं मन्नु भण्डारी, राजपाल एण्ड सन्स।
३. भारतीय नारी अस्मिता और अधिकार- आशारानी वोहा- नेशनल पब्लिशिंग हाओस।
४. भारतीय नारी अस्मिता और अधिकार आशरानी वीरा- नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
५. मन्नु भण्डारी का कथा साहित्य- अनिता राजकुर,नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
६. महाभेज- मन्नु भण्डारी, राधाकृष्ण प्रकाशन
७. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी- डा॔. शिवशंकर पाण्डेय, आल्ख प्रकाशन।
८. स्वामी-मन्नु भण्डारी,नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
९. हिन्दी साहित्य का इतिहास- डा॔. नगेन

BODHAK

Multidisciplinary Perspectives

A Multilingual Book of Research

Edited by

Dr. Pranjit Kumar Nath
Dr. Malabika Sarma
Dr. Joyanta Deka
Dr. Ashifuddin Ahmed Saikia

Bodhak: Multidisciplinary Perspectives

Editorial Board

Editors
Dr. Pranjit Kumar Nath, Dr. Malabika Sarma, Dr. Joyanta Deka and Dr. Ashifuddin Ahmed Saikia

Members
Dr. Utpal Kalita
Dr. Karabi Kakati
Archana Borah

Copyright © 2024, R.G.Baruah College, Guwahati, Assam, India

Offices
Bhubaneshwar, Guwahati, Hyderabad, New Delhi, Visakhapatnam

All rights reserved. No part of this book or parts thereof may be reproduced stored in a retrieval system or transmitted in any language or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise without the prior written permission of the copyright owners and the publishers.

The responsibility for the facts stated, opinion expressed, conclusions reached etc. is entirely that of the author. The editors and the publisher accept no responsibility for them.

ISBN: 978-93-95606-87-5

An Initiative of Research and Publication Cell, R.G.Baruah College, Guwahati, Assam, India

Published by Global Publishing House India
90, Saheed Nagar, Bhubaneswar-7,Odisha
H. No.4, Bye lane-7, New Sarania, Gandhi Basti, Guwahati-3, Assam
No. 13-1-1,Vigneshwara Enclave,Anthony Nagar, Maharanipeta, Visakhapatnam-2,AP

मोहन राकेश द्वारा रचित 'आधे अधूरे' नाटक में आधुनिकतावाद

डॉ करबी तालुकदार

सारांश

मोहन राकेश का नाटक आधे अधूरे आधुनिक हिंदी साहित्य का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है, जो समाज, परिवार, और व्यक्तित्व के विघटन और अस्थिरता को गहराई से प्रस्तुत करता है। यह नाटक एक मध्यमवर्गीय परिवार की कहानी है, जिसमें पात्रों का मानसिक और भावनात्मक द्वंद्व आधुनिक समाज के संकटों को उजागर करता है। सावित्री, एक आत्मनिर्भर महिला, और महेन्द्रनाथ, एक बेरोजगार पति, दोनों अपने-अपने जीवन में अपूर्णता और असंतोष का अनुभव कर रहे हैं। यह नाटक पारिवारिक संबंधों में टूटन, आधुनिकता के प्रभाव, और अस्तित्वगत संकट को गहराई से चित्रित करता है। संवादों में गहरे अर्थ और पात्रों के बीच का तनाव आधुनिकता के सामाजिक और व्यक्तिगत संघर्षों को स्पष्ट करता है। नाटक की संरचना, जिसमें कोई स्पष्ट समाधान नहीं है, इसे पारंपरिक नाटकों से अलग बनाती है। शीर्षक %आधे अधूरे% न केवल पात्रों के जीवन की अपूर्णता को दर्शाता है, बल्कि आधुनिक समाज के विघटन की भी प्रतीकात्मकता है। इस प्रकार, आधे अधूरे न केवल एक साहित्यिक कृति है, बल्कि यह आधुनिक समाज की गहरी जड़ों में जाकर व्यक्तियों के संघर्ष और असंतोष को प्रकट करने वाला एक महत्वपूर्ण दस्तावेज भी है।

भूमिका

हिंदी साहित्य में आधुनिकता की शुरुआत 20वीं सदी के मध्य से मानी जा सकती है, और नाट्य साहित्य में इसका प्रमुख योगदान मोहन राकेश के नाटकों में देखने को मिलता है। मोहन राकेश ने हिंदी नाटकों में आधुनिक जीवन की विडंबनाओं, पारिवारिक संघर्षों और अस्तित्वगत प्रश्नों को गहनता से प्रस्तुत

किया। उनका नाटक आधे अधूरे आधुनिक हिंदी नाटकों में एक विशिष्ट स्थान रखता है। यह नाटक अपने समय के मध्यवर्गीय समाज की पारिवारिक, सामाजिक, और मानसिक चुनौतियों को प्रदर्शित करता है।

आधे अधूरे में आधुनिक जीवन की जटिलताओं, संबंधों की टूटन, और अस्तित्वगत असुरक्षा का चित्रण है। इस आलेख में, नाटक की विषयवस्तु, पात्रों, संवाद, और नाट्य शिल्प में छिपे आधुनिकतावादी तत्वों का विश्लेषण किया जाएगा, ताकि यह समझा जा सके कि मोहन राकेश किस प्रकार आधुनिक जीवन के विरोधाभासों और असंतोष को साहित्यिक रूप में प्रस्तुत करते हैं।

आधुनिकतावाद : एक साहित्यिक और सांस्कृतिक आंदोलन

आधुनिकतावाद (रूश्यस्रद्गह्ठ्ठद्बह्यद्ब) एक ऐसा आंदोलन है जो 19वीं और 20वीं सदी के बीच उभरा। यह आंदोलन पारंपरिक मूल्यों और विश्वासों को चुनौती देने का काम करता है। साहित्य, कला, और संस्कृति में इसका मुख्य उद्देश्य उन संकटों और विडंबनाओं को दिखाना है, जो औद्योगिक और पूंजीवादी समाज के विकास के परिणामस्वरूप उभरे थे। व्यक्तिगत अस्थिरता, अस्तित्वगत संकट, पारिवारिक विघटन और सामाजिक असमानता इस आंदोलन के प्रमुख विषय रहे हैं।

आधुनिकतावादी लेखक परंपरागत संरचनाओं और नैतिकता को खारिज करते हैं और यथार्थ को एक जटिल, अपूर्ण और लगातार बदलने वाली स्थिति के रूप में देखते हैं। मोहन राकेश के 'आधे अधूरे' में यही दृष्टिकोण देखने को मिलता है, जहाँ परिवार की टूटन और व्यक्तियों की आंतरिक घुटन आधुनिक समाज के संकट को प्रकट करती है।

'आधे अधूरे% नाटक, आधुनिक समाज की अस्थिरता, पारिवारिक विखंडन और व्यक्तियों की असंतुष्टि को बारीकी से चित्रित करता है। यह नाटक एक सामान्य मध्यमवर्गीय परिवार के संघर्षो और उनके बीच के टूटते संबंधों पर आधारित है।

इस नाटक की कथा एक परिवार के चारों ओर घूमती है, जिसमें माँ (सावित्री), पिता (महेंद्रनाथ), तीन बच्चे (अशोक, बिन्नी, और किन्नी) और एक अन्य पुरुष पात्र (जगमोहन) शामिल हैं। नाटक का केंद्रबिंदु सावित्री है, जो अपने जीवन और परिवार से पूरी तरह असंतुष्ट है। वह आर्थिक और भावनात्मक रूप से अपने पति से समर्थन पाने की इच्छा रखती है, लेकिन महेंद्रनाथ न केवल

बेरोजगार है, बल्कि परिवार के प्रति उदासीन भी है।

सावित्री, अपने पति से असंतुष्ट होने के कारण, अन्य पुरुषों में अपने लिए सुरक्षा और स्थायित्व ढूँढ़ने की कोशिश करती है, जिसमें जगमोहन भी शामिल है। हालांकि, यह प्रयास भी अधूरा रह जाता है, क्योंकि जगमोहन भी उन अपेक्षाओं को पूरा नहीं कर पाता। नाटक के अंत में, सावित्री को यह एहसास होता है कि चाहे पुरुष कोई भी हो, सब एक जैसे हैं — अधूरे, और इसी अधूरेपन को वह बार-बार अनुभव करती है। इस नाटक में परिवार के अन्य सदस्य भी अपने जीवन में निराश और असंतुष्ट हैं। अशोक बेरोजगार है और अपनी स्थिति से कुंठित है, बिन्नी अपनी शादी को लेकर परेशान है, और किन्नी अपने व्यक्तिगत जीवन में अलगाव महसूस करती है। इन सभी पात्रों के जीवन में कोई ठोस आधार नहीं है, और वे सब एक तरह से 卐आधे अधूरे卐 हैं।

कथावस्तु के केंद्र में मनोवैज्ञानिक और सामाजिक तनाव है, जहाँ हर पात्र अधूरा है, और एक आदर्श की तलाश में है, जो कभी पूर्ण नहीं हो पाता। यह नाटक आधुनिक जीवन की जटिलताओं, असुरक्षाओं, और व्यक्तियों की अंतहीन आकांक्षाओं का प्रतीक है।

'आधे अधूरे' की विषयवस्तु में आधुनिकता का प्रतिबिंब

आधे अधूरे की कहानी एक परिवार के विघटन की गाथा है, जो आधुनिक समाज में पारिवारिक संरचना और संबंधों में हो रहे परिवर्तनों को दर्शाती है। नाटक के पात्र अपने निजी जीवन में असफलता, अधूरापन और असंतोष से जूझ रहे हैं।

सावित्री, जो इस नाटक की नायिका है, एक आत्मनिर्भर और महत्वाकांक्षी महिला है। वह अपने परिवार को सँभालने और आर्थिक संकटों का सामना करने की कोशिश करती है, लेकिन उसकी व्यक्तिगत इच्छाएँ और भावनाएँ पूरी तरह से संतुष्ट नहीं हो पातीं। सावित्री का यह संघर्ष आधुनिक समाज की उस महिला का प्रतीक है, जो पारंपरिक भूमिका से बाहर निकलने की कोशिश करती है, लेकिन समाज और पारिवारिक बंधनों से मुक्त नहीं हो पाती।

महेन्द्रनाथ, जो सावित्री का पति है, बेरोजगार है और समाज में अपनी असफलताओं का सामना कर रहा है। उसकी बेरोजगारी न केवल आर्थिक संकट का कारण है, बल्कि उसके आत्मसम्मान को भी चोट पहुँचाती है। महेन्द्रनाथ का किरदार आधुनिक व्यक्ति के उस संघर्ष को दर्शाता है, जो समाज के दबावों और

अपनी आंतरिक कमजोरियों से जूझ रहा है।

नाटक में सावित्री और महेन्द्रनाथ के बीच के तनावपूर्ण संबंध यह दिखाते हैं कि आधुनिक समाज में पारिवारिक और वैवाहिक संबंध कितने जटिल हो गए हैं। यह नाटक इस बात की भी ओर संकेत करता है कि आधुनिकता ने रिश्तों में भी एक तरह की व्यावसायिकता और आत्मनिर्भरता की भावना पैदा कर दी है, जिससे आपसी संबंधों में दूरी बढ़ती जा रही है।

पात्रों का मानसिक संघर्ष और अस्तित्वगत असुरक्षा

आधुनिक नाटकों में पात्रों का मानसिक और भावनात्मक द्वंद्व प्रमुख भूमिका निभाता है। 'आधे अधूरे' के सभी पात्र किसी न किसी प्रकार से मानसिक संघर्ष और असुरक्षा का सामना कर रहे हैं।

सावित्री का किरदार विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है। वह एक सशक्त महिला है, लेकिन उसके अंदर एक गहरा असंतोष और मानसिक तनाव है। उसकी आत्मनिर्भरता उसे समाज में एक मजबूत स्थान तो दिलाती है, लेकिन उसके पारिवारिक और वैवाहिक जीवन में अस्थिरता का कारण भी बनती है। वह अपने पति महेन्द्रनाथ से संतुष्ट नहीं है, न ही अपने बच्चों से। सावित्री का यह असंतोष आधुनिकतावादी दृष्टिकोण को दर्शाता है, जहाँ व्यक्ति अपने जीवन में आत्मसंतोष पाने की कोशिश करता है, लेकिन सामाजिक और व्यक्तिगत बाधाएँ उसे हर बार रोक देती हैं।

महेन्द्रनाथ का पात्र असफलता और आत्महीनता का प्रतीक है। वह एक ऐसे व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है, जो आधुनिक समाज में अपनी भूमिका को खो चुका है। उसका बेरोजगार होना और अपने परिवार में एक अप्रासंगिक व्यक्ति बन जाना आधुनिक समाज की उस पुरुष प्रधान व्यवस्था पर भी सवाल उठाता है, जहाँ पुरुषों को केवल आर्थिक आधार पर परिभाषित किया जाता है। महेन्द्रनाथ का आत्मसम्मान टूट चुका है, और वह परिवार के लिए एक बोझ बन चुका है। यह असुरक्षा और अस्तित्वगत संकट आधुनिकतावादी नाटकों का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जिसे मोहन राकेश ने गहराई से चित्रित किया है।

संवादों में व्यक्त आधुनिकता

'आधे अधूरे' के संवाद पात्रों के मानसिक और भावनात्मक द्वंद्व को गहराई से प्रकट करते हैं। सावित्री और महेन्द्रनाथ के बीच के संवादों में एक गहरा

असंतोष, निराशा और असुरक्षा झलकती है। उदाहरण के लिए, सावित्री का महेन्द्रनाथ से कहना, "तुमसे कुछ नहीं हो सकता," इस बात का संकेत है कि वह अपने पति से अब कोई उम्मीद नहीं रखती। यह संवाद आधुनिक समाज में रिश्तों में पनप रहे असंतोष और टूटन को दर्शाता है।

संवादों के माध्यम से नाटक में मौजूद मानसिक द्वंद्व और भावनात्मक अस्थिरता को प्रभावी रूप से उभारा गया है। पात्रों के बीच के संवाद न केवल उनकी व्यक्तिगत स्थिति को स्पष्ट करते हैं, बल्कि आधुनिक जीवन की विडंबनाओं और विरोधाभासों को भी व्यक्त करते हैं। संवादों में एक प्रकार की हताशा और निराशा स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है, जो आधुनिक जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू है।

नाट्य शिल्प में आधुनिकतावादी तत्व

'आधे अधूरे' की संरचना और नाट्य शिल्प में भी आधुनिकतावादी तत्व स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं। नाटक का मंचन एक सीमित स्थान, एक कमरे के वातावरण में होता है, जो पात्रों के आंतरिक घुटन और तनाव को प्रतीकात्मक रूप से प्रकट करता है।

मोहन राकेश ने नाटक के मंचन में प्रतीकात्मकता और यथार्थवाद का उपयोग किया है, जो आधुनिक नाटकों की एक प्रमुख विशेषता है। नाटक में पात्रों का आंतरिक संघर्ष और उनका बाहरी संसार एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। मंच की सीमितता और पात्रों की गतिशीलता नाटक के आधुनिकतावादी दृष्टिकोण को और भी अधिक स्पष्ट करती है।

नाटक का अंत भी एक महत्वपूर्ण पहलू है। पारंपरिक नाटकों में अंत में किसी न किसी प्रकार का समाधान होता है, लेकिन आधे अधूरे में कोई स्पष्ट समाधान नहीं मिलता। नाटक का अंत अधूरा और अनसुलझा रह जाता है, जो आधुनिक जीवन की जटिलता और अपूर्णता को दर्शाता है। यह अधूरापन और असंतोष नाटक की संपूर्ण संरचना में व्याप्त है, जो इसे एक सच्चे आधुनिक नाटक का स्वरूप प्रदान करता है।

प्रतीकात्मकता और प्रतीकों का उपयोग

'आधे अधूरे' नाटक का शीर्षक ही प्रतीकात्मक है। 'आधे अधूरे' शब्द आधुनिक जीवन की अपूर्णता, अधूरी इच्छाओं और टूटे हुए संबंधों का प्रतीक है। यह शीर्षक

नाटक के सभी पात्रों के जीवन में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

सावित्री और महेन्द्रनाथ का जीवन अधूरा और अपूर्ण है। उनके संबंधों में न कोई संतोष है, न कोई खुशी। उनके बच्चे भी अपने जीवन में असंतुष्ट हैं। इस प्रकार, शीर्षक आधे अधूरे न केवल व्यक्तिगत जीवन की अपूर्णताओं को व्यक्त करता है, बल्कि आधुनिक समाज की विडंबनाओं और संकटों को भी प्रतीकात्मक रूप से उजागर करता है।

आधुनिक समाज और व्यक्तित्व की अस्थिरता

आधुनिक समाज का एक प्रमुख संकट व्यक्तित्व का अस्थिर होना है। नाटक के सभी पात्र किसी न किसी रूप में इस अस्थिरता का सामना कर रहे हैं। सावित्री का व्यक्तित्व दोहरी भूमिकाओं के बीच फँसा हुआ है—एक ओर वह परिवार की जिम्मेदारियों को निभाने वाली पारंपरिक महिला है, और दूसरी ओर वह एक ऐसी महिला है जो आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता की तलाश में है। उसकी यह द्वंद्वात्मक स्थिति आधुनिकतावादी दृष्टिकोण को प्रत्यक्ष करती है, जहाँ व्यक्ति अपने सामाजिक और व्यक्तिगत दायित्वों के बीच संतुलन स्थापित करने में असफल रहता है।

महेन्द्रनाथ का जीवन भी अस्थिरता और विफलता से भरा हुआ है। वह पारिवारिक और सामाजिक जिम्मेदारियों को निभाने में विफल हो जाता है, जिससे उसका आत्मविश्वास टूट जाता है। यह अस्थिरता आधुनिक समाज के उन पुरुषों की स्थिति को दर्शाती है, जो अपने पारंपरिक दायित्वों को पूरा करने में असफल हो जाते हैं और आत्महीनता की भावना से घिर जाते हैं। यह संकट आधुनिकता की उस चुनौती को दर्शाता है, जहाँ पारंपरिक भूमिकाओं और अपेक्षाओं का निरंतर क्षरण हो रहा है, लेकिन नई भूमिकाएँ और मूल्य अभी स्पष्ट रूप से स्थापित नहीं हो पाए हैं।

सावित्री और महेन्द्रनाथ के बच्चे भी इस अस्थिरता का प्रतीक हैं। वे न तो अपने परिवार से जुड़े हुए हैं, न ही अपनी व्यक्तिगत आकांक्षाओं को पूरा कर पा रहे हैं। उनका जीवन भी अधूरा और असंतुष्ट है, जो आधुनिक समाज में बढ़ती पीढ़ी के संकट और उसकी जटिलताओं को प्रकट करता है।

इस प्रकार, नाटक के सभी पात्र आधुनिक समाज की अस्थिरता और अस्तित्वगत संकट का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह अस्थिरता पारंपरिक मूल्यों के टूटने और नए मूल्यों के स्थापित न होने के परिणामस्वरूप उत्पन्न होती है, जो

आधुनिकतावाद की विशेषता है।

निष्कर्ष

मोहन राकेश का 'आधे अधूरे नाटक आधुनिक हिंदी साहित्य का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है, जो समाज, परिवार, और व्यक्तित्व के विघटन और अस्थिरता को गहराई से प्रस्तुत करता है। नाटक के पात्र, उनके संवाद, और संपूर्ण संरचना आधुनिकतावादी दृष्टिकोण से प्रभावित हैं।

यह नाटक न केवल एक पारिवारिक नाटक है, बल्कि समाज के व्यापक संदर्भ में व्यक्तियों के संघर्ष और असंतोष का चित्रण भी है। आधुनिकतावाद के अंतर्गत यह नाटक उस सामाजिक और मानसिक बदलाव को दर्शाता है, जो पारंपरिक मूल्यों के पतन और नई सामाजिक संरचनाओं के उदय के बीच उत्पन्न हुआ है।

'आधे अधूरे' नाटक के माध्यम से मोहन राकेश ने हिंदी साहित्य को एक नई दिशा दी, जहाँ नाटक का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज और व्यक्ति के यथार्थ को उजागर करना है। नाटक में जीवन की विडंबनाओं और अपूर्णताओं को जिस गहराई से प्रस्तुत किया गया है, वह इसे आधुनिक हिंदी नाटकों में एक विशिष्ट स्थान दिलाता है।

इस नाटक में आधुनिकतावाद का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, जो पात्रों के मानसिक द्वंद्व, पारिवारिक अस्थिरता, और जीवन की अपूर्णताओं के रूप में उभर कर सामने आता है। इस दृष्टिकोण से आधे अधूरे नाटक न केवल एक महत्वपूर्ण साहित्यिक कृति है, बल्कि आधुनिक समाज के अध्ययन के लिए भी एक अमूल्य दस्तावेज है।

सहायक ग्रंथ सूची

1. मोहन राकेश, आधे अधूरे, साहित्य अकादमी प्रकाशन, 1972।
2. गोयल, सुरेंद्र. 'आधुनिक हिंदी नाट्य शिल्प में मोहन राकेश का योगदान.' भारतीय साहित्य समीक्षा, खंड 12, अंक 3, 1998।
3. रस्तोगी, अर्चना. 'आधे अधूरे–पारिवारिक विघटन और आधुनिकता.' हिंदी नाटक पत्रिका, खंड 8, अंक 2, 2005।
4. शर्मा, देवेंद्र. 'आधुनिकतावादी दृष्टिकोण और मोहन राकेश का नाटक साहित्य.' हिंदी साहित्य सम्मेलन, 2011।

5. सप्रे, के. डी. 'आधुनिक हिंदी नाटकों का समाजशास्त्रीय अध्ययन.' साहित्य शोध पत्रिका, खंड 15, अंक 1, 2012।
6. वर्मा, वीरेन. 'अस्तित्ववाद और हिंदी नाटक.' हिंदी साहित्य और समाज, 2013।
7. वर्मा, मोहन लाल. 'आधुनिक हिंदी नाटक और समाजिक विघटन.' हिंदी साहित्य समीक्षा, खंड 9, अंक 4, 2008।

Vol. XVII
Number 29
(ISSN 2229-5755)
January-December 2025

EDUCATION TODAY

A Multidisciplinary International Peer Reviewed/Refereed Journal

APH PUBLISHING CORPORATION

ISSN : 2229-5755

EDUCATION TODAY

A Multidisciplinary International Peer Reviewed/Refereed Journal

Vol. XVII, Number 29 January-December, 2025

Chief Editor

Dr. S. Sabu

Principal, St. Gregorios Teachers' Training College, Meenangadi P.O.,
Wayanad District, Kerala-673591. E-mail: drssbkm@gmail.com

Co-Editor

S. B. Nangia

A.P.H. Publishing Corporation
4435–36/7, Ansari Road, Darya Ganj,
New Delhi-110002

संत कवि रैदास की सामाजिक चेतना : एक आलोकपात

डॉ. करबी तालुकदार*

शोध- सार

हिंदी साहित्य के भक्ति काल में भारत की दीनता, धार्मिक अंधविश्वासों एवं सामाजिक विकृतियों के काल में रैदास का आविर्भाव हुआ। रैदास एक संत कवि थे। उनका अधिकांश समय काशी में ही व्यतित होता था, फिर भी वे देश भर में भ्रमण करते रहते थे। रैदास का जन्म जिस समय हुआ वह समय भारतीय संस्कृति का संघर्ष का समय था। धार्मिक, राजनीतिक और सामाजिक पतन का काल था। लेकिन जब भी भारत भूमि पर विनाश का प्रभाव होता है तब तक ही किसी न किसी महापुरुष का जन्म हुआ है ऐसे ही समय में रैदास का जन्म होता है। उन्होंने तत्कालीन समाज में व्याप्त सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक शोषण के खिलाफ आवाज उठाई थी और एक ऐसे समाज की कल्पना की थी जिसमें यह सब विषमताएँ ना हो। रैदास ने अपने पद एवं साखियों के माध्यम से देश में फैली अंधविश्वास, कुरीतियों एवं रूढ़ियों का विरोध किया और एक स्वच्छ एवं सुसंस्कृत देश के निर्माण में अपना योगदान दिया । उनके काव्य का वैचारिक आधार , सामाजिक चेतना बहुत दृढ़ तथा उनकी भावात्मक पृष्ठभूमि बहुत ही विस्तृत तथा सामाजिक महत्व की है जिस की प्रासंगिकता सामयिक संदर्भो में असंदिग्ध है।

बीज शब्द – रैदास , भक्तिकाल , धार्मिक अंधविश्वास , हिंदू – मुसलमान , सांप्रदायिकता, वर्ण व्यवस्था, आत्मिक शुद्धता , निष्काम कर्म योगी , साम्यवादी , प्रासंगिकता

रैदास संप्रदाय भारत के अधिकांश हिस्सों में फैला हुआ है। इनमें उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, बिहार, मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र और पश्चिमी बंगाल में इस संप्रदाय के लोगों की संख्या बहुतायत में है। इसलिए उच्चारण भेद के कारण रैदास के भी भिन्न-भिन्न प्रदेशों में अनेक नाम प्रचलित है जैसा कि डॉ. संगम लाल पांडे ने लिखा है- " रविदास के कुल 12 नाम मिलते हैं "[1] इनमें उन्होंने रैदास, रविदास , रोहिदास ,रोहिताश ,रखदास, रामदास ,हरिदास आदि का उल्लेख किया है।

हिंदी साहित्य में रैदास का समय विवाद का विषय रहा है। कई विद्वानों ने रैदास के जन्म-मृत्यु के समय में अपने-अपने मत दिए। अंतरसाक्ष्य और बाह्य साक्ष्य से भी यह बात सामने आई कि रैदास रमानंद के शिष्य

*सहकारी प्राध्यापक, राधा गोविंद बरुवा महाविद्यालय, गुवाहाटी-781025।

थे,वे कबीर के गुरु बंध में उनसे बड़े थे ,मीराबाई ने उनसे दीक्षा ली थी। इन सब पर विचार करने के उपरांत रैदास का जन्म माडवादीह में संवत 1433 को माघ सुदी पूर्णिमा, दिन रविवार को मानना उचित है और इसी दिन रैदास संप्रदाय में इनकी जयंती मनाई जाती है। तथा इनकी मृत्यु संवत् 1584 में कृष्ण चतुर्दशी को चित्तौड़ में हुई थी। उनकी माँ का नाम करमाबाई तथा पिता का नाम राघवदास था, जो चमड़े से जूते बनाने का काम करते थे। संत रैदास भी जीवन भर अपना पैतृक पेशा ही करते रहे। साथ-साथ प्रभु भक्ति और हरि कीर्तन भी करते रहते थे।

हिंदी साहित्य के मध्य काल के पूर्वार्ध भाग को भक्तिकाल के नाम अभिहित किया जाता है। यह मध्यकालीन भारत की दीनता , धार्मिक अंधविश्वासों एवं सामाजिक विकृतियों का काल था। विदेशी आक्रांता शाखा हिंदुओं पर जुल्म कर रहे थे, तो हिंदू भी धार्मिक रूढ़ियों के आधार पर अधिक बँटते जा रहे थे। जिसके कारण भारत का सामाजिक ढांचा अस्त-व्यस्त हो गया था। कुल मिलाकर यह धार्मिक , राजनीतिक और सामाजिक पतन का काल था। ऐसे ही समय में दीन -हीन भारत की दुखी जनता को सामाजिक स्वास्थ्य के लिए, समता का संजीवनी पिलाने के लिए भारत भूमि पर संत रैदास का आविर्भाव हुआ था। भारतीय संस्कृति अंतर्विरोधों का विचित्र समन्वय है। यहाँ एक ओर तो किसी अछूत को पूजा, उपासना और पठन-पाठन का अधिकार नहीं दिया जाता था ,वहीं दूसरी ओर यदि कोई अच्छी सिद्धि प्राप्त कर ले तो उसे उदारता से स्वीकार भी कर लिया जाता था।

मध्यकालीन भारत में संत रैदास इन्हीं अंतर्विरोधों का एक सशक्त उदाहरण है। क्रांतिकारी समाज सुधारक, दार्शनिक, भक्त और कवि जैसे विशेषताओं से विभूषित उनके व्यक्तित्व को एक जाति विशेष तक सीमित कर उसकी परिधि को छोटा किया गया। जबकि वे जयदेव ,नामदेव ,गुरु नानक ,कबीर आदि महान संतों की अविरल परंपरा की एक महत्वपूर्ण कड़ी थे, इसीलिए उनके सृजनात्मक व्यक्तित्व का मूल्यांकन इसी सामाजिक परिप्रेक्ष्य में किया जा रहा है।

संत रैदास का समय 15वीं शताब्दी अनुमति किया जाता है। यह समय ऐसा था, जब कि भारत पर मुसलमानों के अत्याचारों अनाचारों की आंधी जोरों पर थी। हिंदुओं की आंखों के सामने उनके देवालय घोषणाएँ करके गिराए जाते थे। उनके आराध्य देवताओं का अपमान किया जाता था। ऐसे समय में ना तो वह विद्रोह ही कर सकते थे और ना ही सिर झुकाए बिना जी ही सकते थे। अत: हृदय के आक्रोश को अपनी असहायता, निराशा और दीनता को प्रभु के सम्मुख कहकर मन को शांति देने के अतिरिक्त और रास्ता ही किया था। तत्कालीन समाज की स्थिति को संत रैदास ने इस प्रकार वाणी दी है

" त्राहि-त्राहि त्रिभुवन पति पावन,
अतिशय शूल सकल बलि जाऊं " [2]

मध्यकालीन भारत अंधविश्वासों के घनघोर अंधेरे में साँस ले रहा था। कुछ बेबुनियाद रूढ़ियों ने उसमें और सड़न पैदा कर दी थी। रैदास की ख्याति सर्वत्र फैल जाने के उपरांत भी सवर्ण हिंदू उन्हें अछूत ही समझते थे। इसका उल्लेख उनके काव्य में यों मिलता है-

"रैदास तू काँवचि फली तुझे ना छिवै कोय।" [3]

इसके अतिरिक्त भी अपने हृदय के इस दर्द को उन्होंने अपनी वाणी में बड़ी सहजता से व्यक्त किया है-

" हम अपराधी नीच घर जन्मे ,कुटुंब लोग हाँसी रे। " [4]

लोगों का यह उपहास ही व्यक्ति को अंतर्मुखी कर देता है और वह अपनी निराशा और उपेक्षा को सर्जनात्मक मोड़ देकर सामाजिक रूढ़ियों पर पुन: चिंतन करता है , तब जाकर कहीं यह रूढ़ मान्यताएं टूटती है। संत रैदास ने तत्कालीन रूढ़ियों के प्रति विद्रोह किया , इसलिए उन्हें सामाजिक क्रांति का अग्रदूत कहने में कोई अत्युक्ति नहीं है।

ऐसे समय में सजग साहित्यकार का जो दायित्व है, उसका संत रैदास ने बड़ी सहजता से निर्वाह किया। सर्वप्रथम उन्होंने हिंदू- मुसलमानों में एकता स्थापित करने का प्रयास किया क्योंकि बाहरी आक्रांताओं से यहां के मूल निवासी हिंदू और मुसलमान दोनों ही परेशान थे , इसीलिए उन्होंने पहले सैद्धांतिक दरार को ही काटना उचित समझा । जिससे भावात्मक एकता स्थापित हो सके। यह तभी संभव था जब राम और रहीम को एक समझा जाए तथा वेद और कुरान को लोग बराबर सम्मान दें। मंदिर और मस्जिद के झगड़े आज की तरह तब भी सांप्रदायिक स्तर पर हिंदू और मुसलमानों को दो फाड़ कर रहे थे। किंतु रैदास ने तब भी इन दोनों को एक ही परमपिता परमात्मा का धर्म स्थल बताकर हिंदू और मुसलमानों को आपस में न लड़ने की सलाह दी उनका मत है-

"मंदिर मस्जिद एक है ,इन मँह अनतर नाहिं।
रैदास राम रहमान का, झगरऊ कोई नाहिं॥
रैदास हमारा राम जोई,सोई है रहमान।
काबा कासी जानी यही, दोऊ एक समान॥ " [5]

दरअसल संत रैदास व्यक्ति व्यक्ति की समानता के हामी थे। देखिए कैसे वह कंगन और कनक के रूपक द्वारा हिंदू और मुसलमानों में एकरूपता स्थापित करने का प्रयास करते हैं-

"रैदास कंगन और कनक मंहि,जिमि अंतर कछु नाहिं।
तैसउ ही अंतर नहीं, हिंदूअन तुरकन मांहि॥ " [6]

इसका एक कारण यह भी है कि प्रत्येक व्यक्ति जन्मत: एक समान है। सब में एक ही रंग का रक्त ,एक प्रकार का मांस और अस्थियाँ है। इस संसार में आकर व्यक्ति, धर्म ,जाति ,वर्ण आदि के नाम पर क्यों बँटे ? संत रैदास ने इस बुनियादी तथ्य को निम्न प्रकार अभिव्यक्ति दी है-

" हिंदू तुरक नहीं कुछ भैदा, सब मँह एक रक्त और मांसा।
दोऊ एकह दूजा कोऊ नाहीं, पेख्यो सोध रैदासा ।। " [7]

इस प्रकार संत रैदास ने तत्कालीन परिस्थितियों में समाज को उचित दिशा देने के लिए धार्मिक अंधविश्वासों का भंडाफोड़ करके समस्त मनुष्यों को भेदभाव भूलकर आपस में मिलजुल कर इस देश की उन्नति के लिए कार्य करने का उद्देश्य दिया। उनका यह उपदेश तत्कालीन परिस्थितियों में जितना आवश्यक था , सामयिक संदर्भों में भी उतना ही प्रासंगिक है क्योंकि भौतिक दृष्टि से इतनी वैज्ञानिक उन्नति कर देने के बावजूद धार्मिक अंधविश्वास पूर्णत: नष्ट नहीं हो पाए हैं। आज भी मंदिर और मस्जिद को लेकर राम और खुदा के नाम पर सांप्रदायिक दंगे निरंतर हो रहे हैं। ऐसी स्थिति में संत रैदास के काव्य में सबक लेना आवश्यक है।

इस समय की समस्त रूढ़ियों पर संत रैदास ने दृष्टिपात किया है। वर्ण व्यवस्था को हिंदू धर्म का कोढ़ माना जाता है। वर्ण व्यवस्था का अभिशाप चौथे वर्ण अर्थात शूद्र को ही सहना पड़ा। प्रारंभ में वर्ण जन्मत: नहीं कर्मत: निर्धारित किए जाते थे। किंतु मध्यकाल तक आते-आते इस मान्यता ने रूढ़ रूप ले लिया। चूकिं संत रैदास इसी वर्ण से संबद्ध थे। इसी कारण उन्हें उच्च वर्ण का उपहास तो सहना पड़ा ही, कभी-कभी प्रतिशोध का शिकार भी होना पड़ा। इसीलिए उन्हें इस सड़ी गली मान्यताओं के पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता अनुभव हुई। अतः पहले पहल तो उन्होंने इन मान्यताओं को सैद्धान्तिक स्तर पर विरोध किया।

इसके बाद उन्होंने स्पष्ट घोषणा कर दी कि कोई भी व्यक्ति जन्म के कारण ऊँच- नीच नहीं हो सकता क्योंकि मनोवांछित जन्म लेना तो किसी के भी हाथ की बात नहीं। हाँ, व्यक्ति के इहि लौकिक कर्म अवश्य ही उसके श्रेष्ठता अथवा निकृष्टत्व को निर्धारित करते हैं -

" रैदास जन्म के कारणै, होत न कोई नीच।
नर को नीच करि डारि है ,औछे करम की कीच।। " [8]

संत रैदास ने तत्कालीन समाज में प्रचलित सड़ी-गली मान्यताओं का विरोध किया। उनकी दृष्टि में ब्राह्मण , क्षत्रिय , वैश्य और शूद्र सभी का बनाने वाला एक ही है। उस एक ही बूंद का विस्तार यह सारा संसार है। प्रत्येक व्यक्ति की आत्मा में उसी परमात्मा का अंश विद्यमान है, फिर किस आधार पर ब्राह्मण को श्रेष्ठ तथा शूद्र को निकृष्ट ठहराया जाए।

इस प्रकार रैदास ने 'वर्ण व्यवस्था' और 'जाति व्यवस्था' का विरोध किया वहीं पर उन्होंने इसकी नई व्याख्या भी प्रस्तुत की। उनकी दृष्टि में ब्राह्मण ऊंचे कुल में जन्म लेने के कारण नहीं होता ,बल्कि ब्राह्मण वह है जिसमें ब्रह्म आत्मा विद्यमान है। समस्त मिथ्या चारों तथा आडंबरों का संत रैदास ने डटकर विरोध किया। वस्तुतः मन की शुद्धता ही सर्वोपरि है। उन्होंने समस्त बुराइयों पर एक-एक कर सशक्त चोट की। समाज सुधारक के नाते उन्होंने समाज की सही नब्ज को पकड़ा। जैसे तत्कालीन राजे महाराजे रात दिन शराब के

नशे में डूबे रहते थे जिसका परिणाम यह हुआ कि यथा राजा तथा प्रजा। निम्न आय वर्ग के लोगों में भी यह व्यसन फैल गया जो इनके पतन का बहुत बड़ा कारण सिद्ध हुआ। इसी प्रकार मांसाहार भी इन व्यसनों में से एक था। यह पापाचार और आत्मिक अशुद्धता का मूल कारण है। संत रैदास ने इसके मूल जीव हत्या पर चोट की तथा जीव हत्या को पाप बताकर अहिंसा के सिद्धांत का प्रचार किया। उन्होंने मुसलमानों द्वारा नमाज पढ़ने को दूषित करार दिया। उन्होंने स्पष्ट किया कि किसी को मारकर कभी भी खुदा की प्राप्ति हो ही नहीं सकती। जिस गाय और बकरी को खुदा ने पोषण के लिए बनाया है। भला उसे मारकर ईश्वर की प्राप्ति कैसे हो सकती है। संत रैदास ने समस्त मानव जाति को अपने हृदय में दया भाव को स्थान देने का उपदेश दिया। यह तभी संभव है , जब व्यक्ति अपनी समस्त इन्द्रियों को वश में कर लें। इच्छाओं को भोग से दूर रखने पर ही व्यक्ति का मन शांत रहता है , मन की शांति संतोष का कारण है , और संतोष व्यक्ति का सबसे बड़ा धन है। धन संचय के करने से सुख नहीं मिलता ,सु ख मिलता है धन को सत्य कर्म में खर्च करने से। वस्तुतः व्यक्ति के व्यक्तित्व से जब तक विषमताएँ समाप्त नहीं हो जाती , यह श्रेष्ठता प्राप्त नहीं कर सकता। इसलिए मनुष्य को अपने जीवन में पांच विकार (काम, क्रोध, मद ,मोह और लोभ) से सदैव दूर रहना चाहिए। जिस व्यक्ति ने इन पाँच विकारों को त्याग दिया वह व्यक्ति महान हो जाता है। संत रैदास सत्य, संतोष और सदाचार को ही जीवन का आधार मानते हैं-

" सत -संतोष अरु सदाचार, जीवन का आधार।
रैदास भये नर देवते, जिन तियागे पंच विकार।। " [9]

सत्संगति का जीवन में बड़ा महत्व है। आचार्य शुक्ल भी कुसंगति के ज्वर को सबसे भयानक मानते हैं। दुराचारी व्यक्ति की संगति व्यक्ति को पथभ्रष्ट कर देती है। संत रैदास ऐसे व्यक्ति से जो सत्य नहीं बोलता, विश्वासघात करता है ,उनसे भूलकर भी बात ना करने की सलाह देते हैं-

" जो नर सत्य न भाषाहिं, अरु करहिं विसासघात।
तिन्हहुँ भुलिहिं, रैदास ना कीजियै बात ।। "[10]

इसके विपरीत रैदास सज्जन व्यक्ति के गुणों का विस्तार से वर्णन करते हैं कि साधु को सांसारिक मोह माया में लिप्त नहीं होना चाहिए। उससे निर्भर होकर समस्त अवगुणों को छोड़कर ईश्वर भक्ति करनी चाहिए। साधु में अहम भावना हो , वह मिथ्या भाषी ना हो , उसे परोपकारी होना चाहिए , उसे क्षमाशील होना तथा तृष्णा रहित होना चाहिए। कोई उँचे कुल में पैदा होकर महान हो जाए , यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। किंतु कोई साधारण आय वर्ग तथा सामाजिक दृष्टि से हेय समझे जाने वाले कुल में उत्पन्न होकर महान हो जाए यह अपने आप में आश्चर्य की बात है। संत रैदास इस तथ्य का एक जीवंत उदाहरण है। उनकी इस महानता का एक ही रहस्य है और वह है उनकी श्रम के प्रति आस्था। निष्क्रियता व्यक्ति को हर

स्तर पर तोड़ देती है इसीलिए संत रैदास व्यक्ति को सदैव नेक नियत से कर्मशील रहने का उपदेश देते हैं। इस निष्काम कर्म योगी संत ने गृहस्थ जीवन का निर्वाह करते हुए जीवन भर काम किया और परम पद प्राप्त किया। डॉ. शिव प्रसाद गोयल ने ठीक ही लिखा है कि आधुनिक युग में संत रैदास की विचारधारा का अपना विशिष्ट महत्व है। अलौकिक दृष्टि से जब बड़े से छोटे तक सब प्राणी कर्तव्य विमुख हो रहे हैं तब लोक परलोक की निंदा स्तुति से दूर अपनी सत साध्वी पत्नी के साथ मामूली सी झोपड़ी में बैठे हुए जूता सीकर जीविका चलाने वाले मस्त फकीर और तन्मय भक्त रैदास का कर्तव्य परायण होकर गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आत्मोद्धार के लिए भक्ति पथ अपनाने का संदेश किसे नहीं मोह लेता? कहना न होगा कि संत रैदास ने सदाचार के शाश्वत सिद्धांतों का प्रचार किया। भारत की पराधीनता इन्हें भी खली तथा उन्होंने इस पराधीनता को पाप बताते हुए कहा कि पराधीनता व्यक्ति को सब ही हीन समझते हैं तथा ऐसे व्यक्ति से कोई भी प्रीत नहीं करता। पराधीन व्यक्ति का कोई भी धर्म नहीं होता। इसलिए हम सब भारतीयों को जाति, धर्म आदि मतभेदों को छोड़कर इस परतंत्रता से मुक्त होने का प्रयास करना चाहिए। संत रैदास एक ऐसे स्वराज की कल्पना करते हैं जहां पर प्रत्येक व्यक्ति को अन्न मिले तथा सब मनुष्य बराबर हो। किसी प्रकार की ऊँच-नीच ना हो। सब लोग प्रसन्न रहे। कुल मिलाकर एक साम्यवादी, समाजवादी व्यवस्था की कल्पना करते हैं।

" ऐसा चाहौं राज, जहां मिलै सबन को अन्न
छोट बड़ों सभ सम बसैं, रैदास रहे प्रसन्न "[11]

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन के उपरांत कहा जा सकता है कि संत रैदास का जीवन और काव्य उदात मानवता के लिए आवश्यक सदाचारों के शाशवत सैद्धांतिक मूल्यों का अक्षय भंडार है , जिनमें से प्रत्येक वर्ग और स्थिति तथा मानसिक स्तर पर व्यक्ति अपने लिए सुंदर मोतियों का चुनाव कर सकता है। उन्होंने हिंदू मुसलमानों में भावात्मक एकता स्थापित करने के प्रयास की। छुआछुट तथा वर्ण व्यवस्था का विरोध कर सामाजिक स्वास्थ्य के लिए अचूक औषधि तैयार की। उन्होंने तत्कालीन सामाजिक शोषण के खिलाफ आवाज उठाई थी और एक ऐसे समाज की कल्पना की थी जिसमें यह सब विषमताएं ना हो। प्रत्येक व्यक्ति श्रम करके जीविकोपार्जन करें तथा हिंदू तथा मुसलमान सब मिलकर भारत की इस पवित्र भूमि पर रहे तथा इसके सर्वांगीण विकास के लिए कार्य करें। इस संपूर्ण तथ्यों पर गंभीरता से विचार करने के उपरांत हम कह सकते हैं कि रैदास के काव्य का वैचारिक आधार तथा उनकी भावात्मक पृष्ठभूमि बहुत ही विस्तृत तथा सामाजिक महत्व की है। इसकी प्रासंगिकता सामयिक संदर्भो में असंदिग्ध है।

संदर्भ

1. संगम लाल , पांडेय , संत रैदास: व्यक्तित्व एवं कृतित्व,साहित्यवाणी,1970,पृष्ठ-7
2. डॉ.एन. , सिंह, संत कवि रैदास-मूल्यांकन और प्रदेय , पुखराज प्रकाशन, 1983, पद 35, पृ-49
3. वही, साखी-6, पृ-23
4. वही, पद 42, पृ-65
5. वही, साखी- 178, पृ-35
6. वही, साखी 185, पृ-35
7. वही, साखी-186, पृ-35
8. वही, साखी-160, पृ-33
9. वही, साखी-193, पृ-36
10. वही, साखी-73, पृ-28
11. वही, साखी-228, पृ-38